हिन्दी दलित कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा की हिन्दी विषय की पी–एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

'रूपरेखा'

सन्–2015

निर्देशिका :

डॉ. सूरज प्रकाश
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
कला संकाय

शोधार्थिनी :

रजनी

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

(हिन्दी विभाग – कला संकाय)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा– 282005

हिन्दी दलित कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

विषय प्रवेशः–

साहित्य के क्षेत्र में नई चेतना का जन्म सामाजिक सांस्कृतिक अभिसरण के फलस्वरूप होता है। हर बार यही देखा गया है कि समाज में होने वाले परिवर्तनों का सही रूप साहित्य में प्रकट होता है। दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक न्याय की मांग को लेकर प्रस्तुत हुआ है। मनुष्य की एक नई पहचान कराने वाले साहित्य के रूप में दलित साहित्य उभरा है।

भारतीय समाज के एक बहुत बड़े हिस्से को समाज ने हमेशा दुत्कारा है, अपमानित किया और मनुष्य होकर भी उसके साथ पशु से भी बद्तर व्यवहार किया है। यह अहसास वेदनामय है और यह वेदना एक व्यक्ति की नहीं पूरे दलित वर्ग की वेदना है। इस वेदना की अभिव्यक्ति जब भी होगी वह आक्रोश के रूप में होगी। इस दृष्टि से इसे एक महत्वपूर्ण सामाजिक घटना मानना चाहिये। दलित साहित्य की निर्मिति सामाजिक परिवर्तन का ही परिणाम है, और यह सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर संवेदनात्मक मन की अभिव्यक्ति भी है।

दलित साहित्य जातिवादी मानसिकता में परिवर्तन के लिए लिखा जाने वाला साहित्य है। यह एक बहुत विशाल समुदाय के सामाजिक सरोकार और अधिकार के लिए संघर्षरत साहित्यकारों का साहित्य है। इसलिए दलित कविताओं के यथार्थ को जानने और समझने के लिए, सदियों से आज तक के इतिहास को सामने रखते हुए आज भी प्रचलित सामाजिक भेदभाव और अन्याय के दंश को झेलने वालों के लिए, उनकी परेशानियों को व्यापक रूप से समझने के लिए दलित साहित्य एवं दलित कविताओं को ठीक से समझने की दरकार है। दलित कविताओं का यथार्थ उनका या उनके जीवन का यथार्थ है, सच है। जो सदियों से मनुष्य नहीं बल्कि पशु समान ही समझे जाते रहे हैं, और अभी भी लगभग वैसी ही स्थिति में हैं। इस धारणा पर शास्त्रीय धार्मिक मोहर तो लगी ही है, इसे स्वयं दलित जमात भी मन से स्वीकारे हुए हैं जो पशुवत जीवन जीने को अभिशप्त है।

दलित कविता, सामाजिक बदलाव लाने का आह्वान और समाज को गहरे सरोकारों के साथ संवेदनशील बनाने का आह्वान करती हैं। इन कविताओं में आक्रोश है, आग है, लावा है, गुस्सा है, विद्रोह है तो साथ–साथ संवेदना, मानवीयता और सब्र भी है। न्याय की उत्कट लालसा है, तो समानता की तीव्र ललक भी है। भाईचारे की भावना है, तो उसके साथ आदर पाने की चाहत भी है। आज दलित कविता का स्वरूप बड़ा ही प्रशंसनीय और आकर्षक बन पड़ा है। दलित कविता तथा दलित कवि सामाजिक शोषण पद्धति के विरोध में विद्रोह को व्यक्त करता है। दलित साहित्य अपनी कविताओं के माध्यम से छूआछूत, वर्ण–व्यवस्था, अस्पृश्यता, जातियता, आर्थिक विषमता, सांस्कृतिक विद्रुपता आदि के प्रति आक्रोश प्रकट करता है। समाज में एक दलित को जितनी यातनाएँ और पीड़ा दी जाती हैं। दलित कवियों ने उसे अपने काव्य में यथा रूप में अभिव्यक्ति दी है। जाति के नाम पर हैण्डपम्प को न छूना, पानी पीने के लिए घण्टों इंतजार करना, धर्म के नाम पर मन्दिरों में प्रवेश पर रोक, धार्मिक स्थलों से दूर रहना, पाखण्ड के नाम पर एक वर्ग का दूसरे वर्ग के अधिकारों का हनन करना आदि विषम परिस्थितियों को कवियों ने अपने काव्य में प्रकट किया है। भारत की सभी भाषाओं में लिखे गये साहित्य में दलित रचनाकारों ने इस अन्याय का चित्रण किया जिसका स्वरूप लगभग एक जैसा ही है। इन सभी विकृतियों और विद्रुपताओं का

चित्रण कर कवियों ने समाज में एकता, समता और जागृति लाने का प्रयत्न अपनी कविताओं के माध्यम से किया है।

भारतीय काव्य परम्परा का जो अपना एक रूप है उस रूप से थोड़ा भिन्न दलित काव्य है यह भारतीय काव्य परम्परा की भाँति सौन्दर्यशास्त्र का काव्य नहीं है अपितु इससे एक दबाए गए, प्रताड़ित किए गये समुदाय की आत्माभिव्यक्ति है। जो उस वर्ग की सामाजिक और मानसिक यातना को प्रकट करती है। इस काव्य में दलित जीवन की पीड़ा, घुटन और स्वानुभूति का चित्रण है। इस वजह से दलित कविता का स्वरूप परम्परागत भारतीय साहित्य से अलग अपनी एक पहचान रखता है। काव्य के समस्त क्षेत्र में दलित काव्य अपना विशिष्ट महत्व रखता है क्योंकि यह आदमी के या मनुष्य के जमीनी पहलू से जुड़ा हुआ है। यह अंधकार में ज्योति की एक किरण है। दलित काव्य के कवि केवल कविता लिखने के लिए या अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए कविता नहीं लिखते, बल्कि वे कविता के माध्यम से अपने जीवन को प्रस्तुत कर स्वतन्त्रता और समानता की दरकार करते हैं। दलित जीवन की जो विषमता है, कटुता है उसे काव्य के रूप में सृजित कर दलित कवियों ने दलित काव्य के स्वरूप को आकृति दी है।

दलित कविता एक सामाजिक विषमता और विद्रुपता की अति के माध्यम से उपजी है। इसके द्वारा दलित, दलित और शोषित वर्ग ने अपनी अभिव्यक्ति को सिद्ध किया है। उनकी वेदना से उपजी कविताओं ने दलित काव्य के स्वरूप को जन्म दिया। विषमतावादी समाज रचना और प्रतिस्थापित, अन्यायपूर्ण वर्णव्यवस्था का नाश करके विरोध न्याय का बिगुल बजाना और दलितों को न्यायिक आन्दोलन पर उतारने का प्रमुख कार्य दलित कविताओं का प्रमुख आधार है जो दलित कविता के स्वरूप को सिद्ध करता है।

दलित कविता सदियों की इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज ही नहीं उठाती बल्कि कुछ सवाल भी पूछती है। वह एक गौरवशाली समृद्ध कही जाने वाली संस्कृति की शोषणपरक, एकपक्षीय, व्यवस्था का प्रतिकार करती है। साथ ही एक विशाल जनसमूह को 'दास' से भी नीचे पशुवत जीवन में सुखी महसूस करवाने वाली षड्यन्त्रकारी आचार–संहिता को बेनकाब कर समानता, भाईचारे न्याय, जीने का हक, आजादी की नई संहिता गढ़ने, अपने को मनुष्य मानकर शिक्षित और संगठित होकर सामाजिक न्याय और बदलाव का झंडा बुलंद करने की ओर बढ़ती है। कुछ ऐसे ही प्रमुख दलित कवि हैं जिनकी कविताओं में यह सभी समस्याएँ और इन समस्याओं से डटकर लड़ने की प्रतिबद्धता दिखाई पड़ती है।

यहां हमने हिन्दी दलित कविता के स्वरूप को समाजशास्त्रीय नजरिये से विश्लेषित करने के लिए हिन्दी के पन्द्रह प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ तथा अन्य भाषाओं के दलित साहित्य के प्रभाव को दिखाने के लिए अन्य भाषाओं के दलित कवियों को भी शामिल किया है। दलित रचनाकारों की भी कविताओं को प्रतिनिधि रूप से शोध में शामिल किया है।

हिन्दी दलित कवि–

1. **मलखान सिंह–** हिन्दी दलित कविता को जिन प्रमुख दलित कवियों ने अपने प्रखर दलित चिन्तन से सशक्त बनाया है, उनमें 'सुनो ब्राह्मण' के रचियता श्री मलखान सिंह एक क्रान्तिकारी और विद्रोही कवि के रूप में हमारे सामने आये हैं। सुनो ब्राह्मण की कविताओं में उनका चिन्तन और सृजन जिस क्रान्ति चेतना के साथ उद्भाषित हुआ है, यह उसी का परिणाम है कि पाठकों ने

उन्हें बेहद पसन्द किया और एक वर्ष बाद ही इस संकलन का दूसरा संस्करण प्रकाशित करना पड़ा।

2. **सूरजपाल चौहान–** सूरजपाल चौहान संघर्षशील चेतना तथा दृढ़तापूर्वक अस्मिता की लड़ाई–लड़ने वाले दलित साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। सूरजपाल चौहान के साहित्य में वास्तविकता, विद्रोह, चुनौति और एक नयी दुनिया बनाने की छटपटाहट स्पष्ट दिखायी देती है। छन्द और मात्रा के आधार पर कविता लिखने वाले संभवत यह हिन्दी के पहले दलित कवि हैं। कविता रचने में रचनाकार का मन ज्यादा रमता है इसीलिए इनकी कविताएं गेय होती हैं।

3. **ओमप्रकाश वाल्मीकि–** ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी दलित साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकारों में से एक हैं। उन्होंने अपने तीन दशक के रचनाकाल में अनेक रचनाएं हिन्दी साहित्य और समाज को दी हैं। श्री वाल्मीकि का प्रारंभिक साहित्यिक जीवन एक कवि का जीवन रहा है जो अपने वातावरण और हिन्दू धर्म की अमानवीय परम्पराओं से दग्ध और उनसे मुक्त होने की छटपटाहट से भरा हुआ है।

4. **जयप्रकाश कर्दम –** दलित साहित्य की प्रथम पीढ़ी के रचनाकारों में जिन लोगों का शुमार किया जाता है उसमें जयप्रकाश कर्दम एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। इनकी कविताओं में दलित वर्ग के स्वाभिमान और हक की आवाज विद्यमान है। इनके कविता संग्रह 'गूंगा नहीं था मैं' के लिए राष्ट्रीय 'अस्मितादर्श' साहित्य अकादमी द्वारा कबीर सम्मान 1999 दिया गया।

5. **श्यौराज सिंह बेचैन–** श्यौराज सिंह बेचैन एक सचेत दलित साहित्यकार है। इनके साहित्य में सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं को मुख्य विषय बनाया गया है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्यौराज सिंह बेचैन ने अनेक विधाओं में साहित्य लिखा है। किस तरह दलित वर्ग के हक को सवर्ण लोग छल रहे हैं आदि का यथार्थ चित्रण इनकी कविताओं में उद्घाटित होता है साथ ही साथ प्रतिरोधी तेवर भी दिखते हैं।

6. **जयप्रकाश लीलवान–** दलित साहित्य के प्रतिभावन और सारगर्भित लेखन की परंपरा में जयप्रकाश लीलवान का नाम बहुत ही शिद्दत और सम्मान से लिया जाता है। खामोशी के साथ आम दलित जनता की तकलीफों शोषण और अन्याय को नयी भाषा, बिम्बों और प्रतीकों में डालकर अभिव्यक्त करने में लीलवान सक्रिय हैं।

7. **असंघोष–** हिन्दी दलित साहित्य की दूसरी पीढ़ी में असंगघोष एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय नाम है। इन्होंने हालांकि बहुत ज्यादा लेखन नहीं किया है, लेकिन जितना भी लिखा है वह अर्थवत्ता और सारगर्भिता को समेटे हुए हैं। असंगघोष का प्रथम काव्य–संग्रह 'खामोश नहीं हूँ मैं' के लिए वर्ष 2002 में चुका है।

8. **उमराव सिंह जाटव–** उमराव सिंह जाटव की पहचान आज तक महत्वपूर्ण दलित कवि के रूप में की जाती है। वे शुरू से ही विद्रोही प्रकृति के रहे हैं और अनेक परम्पराएं तोड़ने का उन्हें श्रेय है।

9. **सुशीला टाकभौरें–** दलित साहित्य में केवल दलित पुरुषों की पीड़ा की अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि वह दलित स्त्री की तकलीफों का भी गवाह है। इस बात को सुशीला टाकभौरें ने अपने लेखन द्वारा सिद्ध किया है। हिन्दी दलित साहित्य में बहुत कम दलित लेखिकाएं हैं। उन्हीं में से एक सशक्त एवं प्रतिबद्ध सामाजिक सरोकारों की अभिव्यक्ति देने में सुशीला जी अग्रणी हैं। इनका

पहला काव्य संग्रह 'स्वाति बूंद और खारे मोती' है। ये लगातार सामाजिक सक्रियता के साथ–साथ साहित्यिक सक्रियता में भी बनी रहीं।

10. डॉ. एन. सिंह– दलित साहित्य के प्रखर आलोचकों में डॉ. एन. सिंह का नाम जाना –पहचाना है। वे एक विद्रोही कवि भी हैं । डॉ. एन. सिंह अपने दौर के सजग और जिम्मेदार कवि हैं। अपनी कविताओं से वे व्यवस्था पर चोट करते हैं। सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय उनका लक्ष्य है। इनके कविता संग्रह हैं– सतह से उठते हुए, सम्युट, दर्द के दस्तावेज , चेतना के स्वर ।

11. सुदेश तनवर – सुदेश तनवर लगातार पिछले बीस वर्षों से लेखन एवं सामाजिक कार्यों से जुड़े है। इनकी पहली कविता 'रात के इस शहर में' प्रकाशित हुई। इनका पहला कविता संग्रह 1992 में ' नियति नहीं यह मेरी' प्रकाशित हुआ। सुदेश तनवर का भावुक कार्यकर्ता मन बौद्धिक उड़ाने भरने के बजाय कविता लिखने में अधिक रमता है।इसीलिए वे दलित साहित्य में एक कवि के रूप में अधिक जाने जाते हैं।

12. डॉ. दयानंद बटोही – डॉ. दयानंद बटोही हिन्दी दलित साहित्य के एक वरिष्ठ एवं महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। प्रमुख रूप से कहानीकार और गद्य लेखक होने के बावजूद इन्होंने महत्वपूर्ण कविताओं का भी लेखन किया है। काव्य संग्रह–**'यातना की ऑखें'** के लिए इन्हें शान्ति प्रियदर्शी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

13. रजनी तिलक– रजनी तिलक स्त्री की व्यथा को और उनके साथ होते अन्याय को अपनी कविताओं द्वारा व्यक्त करती हैं। अपनी कविताओं में ये ब्राह्मणवाद एवं पितृसत्तात्मक मूल्यों का गहराई से विश्लेषण करती हैं। रचनाकार के साथ–साथ वे सक्रिय कार्यकर्ता भी हैं।

14. कावेरी– कावेरी हिन्दी दलित साहित्य की जानी–पहचानी रचनाकार हैं। दलित साहित्य के अन्तर्गत इन्होंने न केवल दलित अनुभव , पीड़ा जाति भेदभाव के साथ–साथ दलित नारी की पीड़ा को भी अभिव्यक्ति दी है। इनके कविता संग्रह –'नदी की लहर' दलित जीवन की विषमताओं को दर्शाता है।

अन्य हिन्दी दलित कवि– दिलीप कठेरिया, सतनाम सिंह, मूलचन्द सोनकर, मुकेश मानस, अजमेर सिंह काजल इत्यादि।

मराठी कवि–

15. नामदेव ढसाल– नामदेव ढसाल अम्बेडकरोत्तर महाराष्ट्र में होने वाले दलित आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में एक है। वे अम्बेड़करोत्तर पीढ़ी के सबसे सशक्त कवियों में शुमार किए जाते हैं। जिन्होंने आंदोलन और कविता को एक–दूसरे का पर्याय बना दिया था।

16. अर्जुन डांगले– अर्जुन डांगले ज्वलंत कवि और कथालेखक 'दलित पैंथर' की स्थापना से ही जुड़े थे। दलित जीवन के तल्ख अनुभव दलित बोध आत्मभान और जातिव्यवस्था, अपमानित जीवन से मुक्ति से संघर्ष की कविता। अर्जुन डांगले की कविताऐं दलित जीवन के अपमानित, शोषित, वंचित और वेदनायुक्त जीवन की सच्चाई की तल्खी से अभिव्यक्त करती है।

17. हिरा बनसोडे– हिरा बनसोडे 'आंबेडकरी आंदोलन' की सक्रिय कार्यकर्ता हैं। सभा, सम्मेलनों में भाषण और कविता का वाचन। सामाजिक विषमता और महिला विषयक समस्या इनकी कविताओं

का प्रमुख अंग है। इनकी 'फिर्याद', 'सखी', 'गीत—विद्रोहचे', कविताएं पाठ्य—पुस्तकों में समाविष्ट हैं।

गुजराती कवि—

18. प्रियंका कल्पित— गुजराती दलित साहित्य में जिन युवा रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट छाप बनायी है उनमें प्रियंका कल्पित का विशेष स्थान है। प्रियंका कल्पित की कविताओं का मूल स्वर दलित और स्त्री की जीवनास्थितियों के इर्द—गिर्द घूमता है। वे दलित होने के बावजूद दलित परिवार और परिवेश के भीतर दलित नारी की घुटन भरी जिन्दगी के बिम्ब प्रस्तुत करती हैं। इस कारण उनकी कविताएं अन्य दलित रचनाकारों से अलग ठहरती हैं।

19. पथिक परमार— पथिक परमार गुजराती दलित साहित्य के मुख्य साहित्यकार हैं। दलित समाज से सरोकार रखने के कारण उनकी इच्छा आकांक्षा और शोषण के रूपों को साहित्य में अभिव्यक्त करते हैं। इन्होंने दलित जीवन को कविता, कहानी और आलोचना में संवेदनशील एवं वैचारिक रूप में अभिव्यक्त किया है।

20. अरविन्द बेगड़ा— अरविन्द बेगड़ा गुजराती दलित साहित्य का एक प्रमुख नाम है। इन्होंने एम0ए0 तक की शिक्षा हासिल की। मुख्य रूप से अरविन्द बेगड़ा कवि हैं लेकिन इन्होंने बहुत सी कहानियों का लेखन भी किया है। इनके लेखन का मूल स्वर दलित—पीड़ित एवं शोषितों के अन्याय के प्रति विरोध—विद्रोह का है।

पंजाबी कवि—

21. मदन वीरा— मदन वीरा के साहित्य की विशेषता है नये प्रकार के दलित जीवन के बिम्ब और दलित यातना की सौन्दर्यात्मक ऊँचाई। उन्होंने यह सिद्ध किया कि यातना की ओर करूणा को कैसे एक ऊँचाई दी जा सकती है यह उनकी कविताएं देखकर पहचाना जा सकता है।

22. बलबीर माधोपुरी— बलवीर माधोपुरी पंजाबी भाषा के बहुत ही सशक्त रचनाकार हैं। इन्होंने दलित उत्पीड़न के विभिन्न सजीव बिम्बों को गद्य और पद्य दोनों में ही कुशलता के साथ रेखाकिंत किया है।

23. लाल सिंह दिल — लाल सिंह दिल ने पंजाबी दलित साहित्य को एक नया सौन्दर्यात्मक और वैचारिक धरातल प्रदान किया है। पंजाब की धरती वैसे भी पाश एवं बल्ली सिंह चीमा जैसे क्रान्तिकारी कवियों के नाम से जानी जाती है। लाल सिंह दिल ने उसी क्रान्तिकारी कवियों के नाम से जानी जाती है। लाल सिंह दिल ने उसी क्रान्तिकारी तेवर के साथ पंजाबी दलित साहित्य में पदार्पण कर उसे एक नयी दिशा दी है।

कन्नड़ कवि—

24. शान्ता नाइक— शान्ता नाइक कन्नड़ दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। कन्नड़ दलित साहित्य और आन्दोलन का हिन्दी समाज से परिचय कराने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इनका काव्य संग्रह है — 'पुराने ख्यालों का नया आदमी'।

25. अरविन्द मालगन्ती— डॉ0 अरिवन्द मालगन्ती कन्नड़ भाषा के बहुचर्चित दलित रचनाकार हैं। उन्होंने आलोचनात्मक लेखन एवं रचनात्मक लेखन में बहुत कार्य किया है। उनके चालीस से भी

ज्यादा शोध लेख कन्नड़ साहित्य में प्रकाशित हो चुके हैं। जो हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, तेलुगू, बंगाली आदि भाषाओं में अनुदित हुए हैं।

26. गंगाराम चंडाल– गंगाराम चंडाल कन्नड़ दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। सामाजिक रूप से दलितों में भी दलित जाति में पैदा होने के कारण कठिन जीवन–स्थितियों का सामना करना पड़ा। वही दारूण जीवन के चित्र कविताओं में आते हैं। ये दलित संघर्ष समिति, कन्नड़ साहित्य परिषद्, बन्धया साहित्यिक आन्दोलन में सक्रिय हैं।

तेलुगू कवि–

27. शिवसागर– शिवसागर का मूल नाम के0जी0 सत्यमूर्ति है। वे आंध्र के महत्वपूर्ण क्रांन्तिकारी कवि हैं। वे लंबे समय तक भूमिगत हो गये थे। वे एक पत्रिका का प्रकाशन करते हैं, जिसका नाम– ''एकलव्य'' है। अभी वे सत्ता के लिए संघर्ष चला रहे हैं। जो बहुजनों को प्राथमिकता देता है।

28. शंबूक– शंबूक एक मार्क्सवादी दलित कवि थे। इनका रचनाकर्म इस प्रकार है– 1. पोयदी एम्मिलेनोल्लम 2. कम्यूनिस्ट उद्यमम् पाई कुल प्रभावम् (The Impact of Caste on Communist Movement 3. चरित्रलों, क्रैस्तवम का परिशीलना (ईसाइयत के चरित्र का परिशीलन) उन्हें एक मुठभेड़ में मार दिया गया। उन पर एक किताब लिखी गई, जिसका शीर्ष है ''शंबूक शकम्''।

29. एन्ड्लूरी सुधाकर– एन्ड्लूरी सुधाकर तेलुगू के प्रमुख दलित कवि हैं। इनका शोध विषय ''Literary Perspective of Jasua Transition'' था। इनका रचनाकर्म हैं– 1. कोन्तागबिलम (लंबी कविता), 2. वर्तमानम (कविता संग्रह), 3. मल्ले गोग्गलागोडुगु, 4. अर्थमकतम (मादिगा की आत्मकथा) 5. ना पुस्तकमे ना आयुधम् (मेरी पुस्तक ही मेरा आयुध है) 6. नल्ल दृक्षा पंतरी, 7. वर्गीकरणम् (लंबी कविता), 8. अनुवाद कार्य–शरण कुमार लिंबाले की 'अक्करमाशी' का तेलुगू में अनुवाद।

विषय का अनावरणः–

दलित साहित्य की विकास यात्रा को देखें तो हिन्दी दलित साहित्य में कविताओं का सृजन या रचना काफी अधिक मात्रा में हुई है। साहित्य की समस्त विधाओं की भाँति यह जानना जरूरी है कि दलित काव्य का अविर्भाव किस काल में हुआ और इसकी शुरूआत को लेकर बहुत चर्चाएँ हुई हैं कुछ कवियों और विचारकों का मानना है कि दलित काव्य का शुभारम्भ बुद्ध के युग में हो गया था। कुछ दलित आलोचक निर्गुण संत काव्य : कबीर एवं रविदास से दलित काव्य का प्रारम्भ मानते हैं। लेकिन वहाँ अध्यात्म और धर्म कबीर और रविदास के काव्य में मौजूद हैं जबकि आज का दलित काव्य अधिक उन्नत, तार्किक और परिपक्व है। दलित कवियों ने अपनी कविताओं में अपनी आत्मगत अभिव्यक्ति कर उसे और अधिक प्रौढ़ता प्रदान की है। दलित काव्य केवल हिन्दी में ही नहीं लिखा गया अपितु सबसे पहले मराठी फिर हिन्दी और अन्त में पंजाबी, गुजराती, कन्नड़, तमिल, तेलुगू आदि भाषाओं में दलित कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति कर दलित काव्य परम्परा को आगे बढ़ाया। इस काव्य में सभी भाषायी कवियों ने अपने–अपने जीवन की विषमता को, विद्रुपता को, अंधविश्वास को, जातियता को और सामाजिक अन्याय को अभिव्यक्ति दी है। यह दलित काव्य दलितों की स्थिति के साथ उसके आत्मिक आक्रोश को भी प्रकट करता है। दलित वर्ग सदियों से

जिस वेदना और पीड़ा का चित्रण दलित कविताओं में एक आक्रोश और विद्रोह के रूप में हुआ है। दलित साहित्य दलितों के ऊपर हुए अत्याचार और शोषण का साहित्य है, जिसमें दलित वर्ग का एक आक्रोश है कवि अपने व्यक्तिगत अनुभवों के स्तर पर यथार्थ का साक्षात्कार करता है तब उसे यही महसूस होता है कि प्रचलित जीवन प्रणाली सड़ चुकी है। अतः उसे अस्वीकार ही किया जाना चाहिए। सामाजिक विकृतियों, वीभत्सताओं व असंगतियों पर इन कवियों का अधिक ध्यान रहता है दलितों के जीवन को और उन पर होते अत्याचारों का जिक्र सवर्ण रचनाकारों द्वारा कविता का विषय बनाने की ओर इन सवर्ण रचनाकारों का अधिक झुकाव नहीं है।

व्यक्तिगत यथार्थ और सामाजिक यथार्थ के बीच निरन्तर टकराहट ने इन कविताओं में एक विशिष्ट तनाव को जन्म दिया है। यह तनाव इस दौर के रचनाशील युवा पीढ़ी के अनेक कवियों में देख सकते हैं दलित कविता उन सबको नष्ट करने के लिए प्रवृत्त है जो अन्यायपूर्ण, पीड़क और समय के प्रतिकूल है। वह अस्पृश्यता, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड सामाजिक, धार्मिक विषमता आदि का नाश करने के लिए प्रवृत्त है। दलित कविता का विद्रोह मानवनिर्मित जातिव्यवस्था से है। जिसके कठोर बंधनों के कारण अस्पृश्यता का अभिशाप भोगती मानवता एक घूँट पानी के लिए तरसती रही। दलित साहित्यकारों की यह कविताऐं समाज को एक नई चेतना और सोच का स्वतन्त्र दायरा देने में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह कर रही है। क्यों कि साहित्य वह है जो समाज के हित के लिए लिखा जा रहा है। और दलित कविताएँ भी उसी मानव हित को महत्व देती हैं, क्यों कि कला की अपेक्षा घाव या प्रहार करने की क्षमता अधिक होती है। दलित साहित्य आनन्द या सौन्दर्यानुभूति के लिए लिखा गया साहित्य नहीं है बल्कि यह एक परिवर्तन या बदलाव का साहित्य है। इसलिए दलित कविता में एक कलात्मकता के अतिरिक्त हकीकत की दृष्टि है। वर्तमान व्यवस्था के प्रति एक विद्रोह की भावना है और साथ ही पुरानी लीक से हटकर एक समानतावादी और स्वतन्त्रतावादी सोच का दृष्टिकोण है। इसलिए कहा जा सकता है कि दलित कविताऐं, कलात्मकता और सौन्दर्यानुभूति की भावना से कोसों दूर है और यह दलित कविता आज पुरानी लीक से हटकर चलने की मुहिम चलाने के लिए कटिबद्ध है।

प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित शोध कार्यः—

(क) हिन्दी दलित काव्य संवेदना और शिल्प—शोधकर्ता : डा0 कालीचरन स्नेही, पी0एच0डी0 शोध, लखनऊ यूनिवर्सिटी

(ख) दलित विमर्श के सन्दर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएँ— शोध निर्देशक—डा0 गोविन्द प्रसाद, शोधकर्ता— दयाराम परिहार सन् 2001, एम0फिल शोध, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली

(ग) नवे दशक की हिन्दी कविता पर अम्बेडकर का प्रभाव—शोध निर्देशक—प्रो0 सावित्री चन्द्र शोभा, शोध छात्रा—रजतरानी आर्य सन्— 1994, एम0 फिल शोध, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी दिल्ली

(घ) ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'बस्स ! बहुत हो चुका' और 'अब और नहीं.......' कविता संग्रहों में दलित चेतना—शोध निर्देशक—प्रो0 शर्मिला सक्सेना, शोध छात्रा—नीलम सन् 2013 एम0फिल शोध, दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयाल बाग, आगरा

समीक्षाः—

(क) दलित मुक्ति–चेतना और अम्बेडकर–अनुसंधान–त्रैमासिक पत्रिका अंक जुलाई–दिसम्बर– 2015

(ख) समकालीन साहित्य के दलित संदर्भ का वैशिष्ट्य समय के प्रति रचनात्मक सचेतनता– श्री अनिल कुमार, शोध श्री , चतुर्थ अंक अक्टूबर– 2011

(ग) बुंदेलखण्ड में दलित साहित्य के प्रणेता–डॉ0 एम. एस विमल, डॅा0 के. एल. पटेल, शोध दिशा अंक अप्रैल–जून– 2014

(घ) भारतीय दलित साहित्यः स्वरूप एवं शोध की नई संभावनाएं– दिलीप कठेरिया, दलित अस्मिता, जनवरी–जुलाई –2014

(ङ.) दलित साहित्य के प्रतिमानः एक विवेचन–डॉ0 जगदीश शरण

पुस्तक समीक्षाः–

(क) मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक **चेतना–**

विमल थोरात, हिन्दी बुक सेन्टर

(ख) दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ–ओमप्रकाश वाल्मीकि राधाकृष्णन प्रकाशन 2013

(ग) दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार–रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन

(घ) कविता के नये सीमान्त–डॉ0 सुखवीर सिंह, पराग प्रकाशन दिल्ली 1993

(ङ.) दलित कविता का संघर्ष– कँवल भारती, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्यः–

साहित्य के अंतर्गत एक ऐसे साहित्य का सवाल जो न जाने कितनी ही सदियों से अपने जीवन संघर्ष की गाथा का चित्रण करता आ रहा है। ये गाथा उस वर्ग की है जिसे समाज ने श्रेणी के नाम पर सबसे निचले पायदान पर रखा है, और उसको अपने मनमाने ढंग से छला है। यह दलित वर्ग आज अपने साथ हुए सभी अन्यायों को प्रकट करने के लिए प्रतिबद्ध है यह प्रतिबद्धता उनके लेखन में स्पष्ट रूप से दर्शनीय है। दलित कवियों की कविताऐं पूर्ण रूप से दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं और भारतीय समाज के ब्राह्मणवादी स्वरूप का समाजशास्त्रीय विश्लेषण भी प्रस्तुत करती हैं। दलित कविता के इस स्वरूप को शोध कार्य के माध्यम से विश्लेषित करना एवं उसका गहन अध्ययन विभिन्न विचारों के माध्यम से करना शोध कार्य की आवश्यकता, महत्ता और सार्थकता को सिद्ध करता है। हिन्दी दलित कविताओं में दलित वर्ग के समस्त जीवनानुभवों का और भारतीय समाज में होते भेदभाव और अन्याय का सूक्ष्म चित्रण हुआ है, जो उनकी वास्तविक स्थिति को यथार्थ के पटल पर अंकित करता है। हिन्दी दलित कविताओं एवं अन्य भाषा की दलित कविताओं में अपने संघर्ष की सम्पूर्ण गाथा एवं अपने इंसान होने के नाते वजूद को कविताओं की रचना के माध्यम से अंकित किया है, जिसका विश्लेषण करना शोधकार्य की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में हिन्दी दलित कविताओं में दलित साहित्य की सैद्धात्तिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए विभिन्न विद्वानों एवं समाज सुधारकों के योगदान पर विचार किया जाएगा साथ ही

हिन्दी दलित कविताओं के समाजशास्त्रीय विश्लेषण द्वारा भारतीय समाज के ब्राह्मणवादी स्वरूप को सामने रखा जाएगा। हिन्दी दलित कविता अपने सौन्दर्यशास्त्र की निर्मिति अपनी परिस्थिति एवं अपने साहित्य के अनुरूप कर रही है या उसका सौन्दर्यशास्त्र शिष्ट साहित्य के साथ अपनी समानता नहीं रखता आदि तर्कों को लेकर दलित कविता के सौन्दर्य मूल्यों एवं हिन्दी साहित्य में निहित सौन्दर्यमूल्यों का गहराई से विश्लेषण किया जायेगा। साथ ही हिन्दी दलित कविता में निहित व्यवस्था के प्रति विरोध को लेकर उसके प्रारम्भिक समय और दलित समाज के अन्य पिछ़डे वर्गों का सूक्ष्म अध्ययन किया जायेगा दलित कविता का उद्‌भव कब हुआ और वह किस परम्परा के अनुरूप विकास की धारा को प्राप्त हुई एवं किन प्रमुख कवियों ने इसके प्रगति पथ को सार्थक सहयोग प्रदान किया आदि पर गहन विचार–मंथन किया जायेगा। दलित कविताओं में शिल्प विधान का सूक्ष्माति–सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण करते हुए दलित कविताओं में प्रयुक्त भाषा के प्रयोग पर गहन चिन्तन एवं विश्लेषण करने के साथ–साथ प्रयुक्त बिम्बों, प्रतीकों का गहनता से अध्ययन करना प्रमुख उद्देश्य रहेगा।

समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा न केवल पुस्तकें, पत्र–पत्रिकायें, संदर्भ ग्रन्थ आदि का अध्ययन किया जायेगा अपितु विषय से सम्बन्धित कवियों व लेखकों से विचार–विमर्श के साथ–साथ साक्षात्कार–प्रश्नावली आदि शोध प्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए शोध को सार्थक बनाने का प्रयास रहेगा।

हिन्दी दलित कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रथम अध्याय– दलित साहित्य एवं चिन्तन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(क) साहित्य एवं चिन्तन – परिचयात्मक स्वरूप

(ख) दलित साहित्य एवं चिन्तन का वैचारिक आधार

1. महात्मा बुद्ध 2. आजीवक 3. मखली गोशाल 4. चार्वाक 5. नाथसिद्ध, संत साहित्य एवं कबीर

(ग) दलित वैचारिकी एवं चिन्तन का आधुनिक स्वरूप

1. महात्मा ज्योतिबा फुले 2. सावित्रीबाई फुले 3. डॉ0 अम्बेडकर
4. पेरियार 5. गोविन्द गुरू 6. बाबू मंगूराम 7. स्वामी अछूतानन्द

द्वितीय अध्याय– दलित साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि

(क) समाजशास्त्र की परिधि
(ख) साहित्य का समाजशास्त्र
(ग) भारतीय समाज का विश्लेषण
(घ) दलित की अवधारणा

तृतीय अध्याय– दलित साहित्य की अवधारणा
(क) दलित साहित्य एवं गैर दलित साहित्य का अन्तः संबंध और अन्तर्विरोध
(ख) आधुनिक हिन्दी दलित कविता में दलित प्रश्न (भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद)
(ग) प्रगतिशील हिन्दी कविता और दलित चेतना
(घ) हिन्दी दलित कविता का मूल स्वर
(ड़) हिन्दी दलित कविता का वैशिष्ट्य

चतुर्थ अध्याय– हिन्दी दलित कविता और भारतीय दलित कविता का अन्तःसंबंध
(क) दलित पैन्थर एवं हिन्दी दलित कविता
(ख) दक्षिण भारतीय भाषाओं की दलित कविता
(ग) पंजाबी दलित कविता
(घ) गुजराती दलित कविता
(ड़) अन्य भारतीय भाषाओं की दलित कविता

पंचम अध्याय– दलित कविता की सौन्दर्यदृष्टि और कलात्मक विधान

(क) दलित सौन्दर्य दृष्टि

(ख) कला के घटक

1. बिम्ब
2. प्रतीक
3. कथा प्रसंग
4. भाषा और शैली

मूल्यांकन

उपसंहार

परिशिष्ट

1. आधार ग्रन्थ
2. कोश
3. विश्वकोश
4. सन्दर्भ ग्रन्थ
5. पत्र–पत्रिकाऐं
6. साक्षात्कार
7. प्रश्नावली

आधार ग्रंथ

क्र॰स॰	रचनाकार / संपादक	रचना	प्रकाशन	संस्करण
1.	मलखान सिंह	सुनो ब्राह्मण	स्वराज प्रकाशन,दिल्ली	1996
2.	मलखान सिंह	विरासत	शब्दारम्भ प्रकाशन,दिल्ली	2015
3.	सूरजपाल चौहान	क्यों विश्वास करूं	वाणी प्रकाशन,दिल्ली	2009
4.	सूरजपाल चौहान	कब होगी वह भोर	वाणी प्रकाशन,दिल्ली	2009
5.	सूरजपाल चौहान	वह दिन जरूर आयेगा	वाणी प्रकाशन,दिल्ली	2012
6.	ओमप्रकाश वाल्मीकि	बस्स! बहुत हो चुका	वाणी प्रकाशन,दिल्ली	1997
7.	ओमप्रकाश वाल्मीकि	सदियों का संताप	दलित प्रकाशन संस्थान दिल्ली	1989
8.	जयप्रकाश कर्दम	गूंगा नहीं था मैं	अतिश प्रकाशन,दिल्ली	1997
9.	जयप्रकाश कर्दम	तिनका–तिनका आग	सम्यक प्रकाशन,दिल्ली	2004
10.	जयप्रकाश कर्दम	बस्ती से बाहर	अमन प्रकाशन,कानपुर	2013
11.	श्यौराज सिंह बेचैन	नई फसल	मानसी प्रकाशन, मुरादाबाद	1987
12.	श्यौराज सिंह बेचैन	अच्छे लोग	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2015
13.	जयप्रकाश लीलवान	नए क्षितिजों की ओर	अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली	2014

15.	जयप्रकाश लीलवान	समय की आदमखोर धुन	अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली	2009
16.	असंघोष	मैं दूँगा माँ कू जबाब	शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली	2001
17.	असंघोष	समय को इतिहास लिखने दो	शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली	2007
18.	उमराव सिंह जाटव	प्रतिरोध के स्वरों पर सवार	यूनीस्टार बुक्स,चण्डीगढ	2007
19.	कँवल भारती	तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती	स्वराज प्रकाशन,दिल्ली	1996
20.	सुदेश तनवर	नियति नहीं यह मेरी	सर्वस्व फाउन्डेशन नई दिल्ली	1999
21.	सुदेश तनवर	रात के इस शहर में	नवोदय प्रकाशन नई दिल्ली	1991
22.	सुदेश तनवर	घर वापसी	समता प्रकाशन नई दिल्ली	2012
23.	सुशीला टांकभौरें	स्वाती बूँद और खारे मोती	स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली	2013
24.	सुशीला टांकभौरे	यह तुम भी जानो	स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली	1994
25.	सुशीला टांकभौरे	तुमने उसे कब पहचाना	स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली	1997
26.	सुशीला टांकभौरे	हमारे हिस्से का सूरज	स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली	2000
27.	लाल सिंह दिल	बहुत सारे सूरज	नवयवना प्रकाशन पंजाब एवं नई दिल्ली	2008

28.	लाल सिंह दिल	सतलुज की हवा	नवयवना प्रकाशन पंजाब एवं नई दिल्ली	2010
29.	शान्ता नाइक	पुराने ख्यालों का नया आदमी	तारा प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स,मैसूर	2007
30.	विमल थोरात,सूरज बड़त्या	भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर	रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर	2008

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी और मराठी दलित साहित्य एक तुलनात्मक अध्ययन–डा0 सुरेश मारूतिराव मूले, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2007
2. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र–शरण कुमार लिबांले, वाणी प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2009
3. दलित साहित्य एक मूल्यांकन–प्रो0 चमनलाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2007
4. कविता के नये सीमान्त– डा0 सुखवीर सिंह, पराग प्रकाशन दिल्ली, संस्करण –1993
5. हिन्दी दलित साहित्य आन्दोलन– सरोज पगारे, विकास प्रकाशन कानपुर, संस्करण– 2012
6. दलित साहित्य का समाजशास्त्र– हरिनारायण ठाकुर, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, संस्करण– 2009
7. हरिजन से दलित– राजकिशोर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2004
8. दलित अभिव्यक्ति संवाद और प्रतिवाद– रूपचन्द गौतक, श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2007
9. आधुनिकता के आइने में दलित–अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2009
10. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार– रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2001
11. परम्परा इतिहासबोध और संस्कृति– श्यामचरण दुबे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2000
12. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र– ओमप्रकाश वाल्मीकि , वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2014
13. सत्ता संस्कृति और दलित सौन्दर्यशास्त्र– सूरज बड़त्या, अनामिका प्रकाशन, संस्करण –2009
14. दलित साहित्य अनुभव संघर्ष एवं यथार्थ– ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण –2013
15. दलित हस्तक्षेप–रमणिका गुप्ता, शिल्पग्राम प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण –2004
16. दलित साहित्य की भूमिका–हरपाल सिंह 'हरूष' जवाहर पुस्तकालय मथुरा, संस्करण –2005
17. दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचन्द–सदानन्द शाही, प्रेमचन्द साहित्य संस्थान प्रकाशन, संस्करण–2000

18. साहित्य और दलित चेतना– महीप सिंह व चन्द्रकान्त बांदिवडेकर अभिव्यंजना प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–2009

19. दलित साहित्य और समसामयिक सन्दर्भ– डॉ0 श्रवण कुमार मीणा, संजय प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2009

20. हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास–श्यामलाल राही, साहित्य संस्थान गाजिय़ाबाद, संस्करण–2004

21. दलित विमर्श की भूमिका – कँवल भारती, साहित्य उपक्रम, संस्करण–2002

22. दलित साहित्य के प्रतिमान–डा0 एन0 सिंह, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2012

23. दलित विमर्श : विकल्प का साहित्य कुछ टिप्पणियाँ, कुछ सवाल– मूलचन्द सोनकर, ध्वनि प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2007

24. दलित विमर्श एक अध्ययन– डॉ0 शकुन्तला चव्हाण, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, संस्करण–2013

25. दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि–डॉ0 जनार्दन वाघमारे, शिवालिका प्रकाशन दिल्ली,संस्करण 2014

26. मैनेज़र पाण्डेय– साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली–2006

27 . रामविलास शर्मा– मार्क्सवाद और प्रगतिशील आलोचना , वाणी प्रकाशन नई दिल्ली –2003

28. निर्मला जैन– साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण –1986

29. श्यामाचरण दुबे–भारतीय समाज, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2001

30. श्यामाचरण दुबे– परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2000

31. श्यामाचरण दुबे– समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2000

32. लू–शुन संकलन और सम्पादन– कर्ण सिंह चौहान– कला साहित्य और संस्कृति, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली–1994

सहायक पत्र–पत्रिकाएँ

1. दलित अस्मिता, संपादक–विमल थोरात, त्रैमासिक पत्रिका एंड्रयूगंज दिल्ली
2. नया पथ, संपादक–मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, अर्द्धवार्षिक, दिल्ली
3. बयान, संपादक–मोहनदास नैमिश्राय, नई दिल्ली
4. कथादेश, संपादक–हरिनारायण, मासिक पत्रिका, नई दिल्ली
5. वाक्, संपादक–सुधीश पचौरी, त्रैमासिक दिल्ली
6. जनसत्ता अखबार– दैनिक समाचार पत्र, संपादक–ओम थानवी दिल्ली
7. तद्भव संपादक– अखिलेश, इलाहाबाद
8. युद्धरत आम आदमी– रमणिका गुप्ता, त्रैमासिक, दिल्ली
9. शुक्रवार, संपादक–विष्णु नागर, मासिक पत्रिका, दिल्ली ?

शोध निर्देशक के मार्गदर्शन से इसमें उचित परिवर्तन संभव है।